हिन्दी

(स्पर्श)(पाठ 4)(शरद जोशी – तुम कब जाओगे, अतिथि)
(कक्षा 9)

प्रश्न अभ्यास

खंड – क

प्रश्न 1:
लेखक अतिथि को कैसी विदाई देना चाहता था ?
उत्तर 1:
लेखक अतिथि को भाव'–भीनी विदाई देना चाहता था , वह चाहता था कि जब अतिथि उसके घर से जाए तो वह यहाँ की एक अच्छी सी तसवीर अपने मन में लेकर जाए वह उसको जबरदस्ती कुछ और दिन रुकने को कहेगा और अतिथि के न मानने पर वह सपरिवार उसे नम आँखों से रेलगाड़ी में बैठाकर आएगा

प्रश्न 2:
पाठ में आए निम्नलिखित कथनों की व्याख्या कीजिए।

(क) अंदर ही अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया ।
उत्तर क:
जब लेखक के घर में अनचाहा अतिथि आ गया तो इस खयाल से कि उसे अतिथि की खूब खातिरदारी करनी पड़ेगी इस महँगाई के दौर में घर चलाना ही बड़ा मुश्किल हो रहा है ऐसी स्थिति में अंदर ही अंदर लेखक का बटुआ काँप गया ।

(ख) अतिथि सदैव देवता नहीं होता ,वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता हैं ।
उत्तर ख:
हमारी भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवता माना जाता है । वह इसलिए क्योंकि अतिथि जब भी किसी के घर आता है तो उसका आगमन किसी देवता के आगमन से कम नहीं माना जाता है और उसका सत्कार भी किसी देवता की भाँति किया जाता है । लेकिन जब वही अतिथि परेशानी का कारण बन जाए तो किसी हद तक मानव और धीरे–धीरे राक्षस का रूप धारण कर लेता है ।

(ग) लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें ।
उत्तर ग:
घर को स्वीट–होम इसलिए कहा जाता है क्योंकि व्यक्ति को अपने घर में जो खुशी का माहौल मिलता है वह अन्य कहीं नहीं मिलता है । यही माहौल जब किसी के कारण बिगड़ जाता है तो धीरे–धीरे खुशी भी कम होने लगती है । अतः लोग दूसरे के घर की खुशियों के माहौल कों खराब करने का करण न बनें ।

(घ) मेरी सहनशीलता की की वह अंतिम सुबह होगी ।

उत्तर घः

लेखक अपने अतिथि को पिछले चार दिनों से झेल रहा था, और नौबत पकवान से लेकर खिचड़ी तक आ गई थी दोनों के मध्य वार्तालाप भी बंद हो गया था लेखक मन ही मन अतिथि को कोस रहा था। अब वह मानने लगा था कि अगली सुबह यदि अतिथि नहीं गया तो उसकी सहनशीलता जवाब दे जाएगी और हो सकता है कि वह उसे अपमानित करके भी विदा कर दे ।

(ङ) एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर तक साथ नहीं रह सकते

उत्तर ङः

देवता और मनुष्य दोनों अपने –अपने स्थान पर ही अच्छे लगतें हैं । देवता मंदिर में और मनुष्य समाज में अतिथि को देवता इसलिए कहते हैं कि वह कहीं पर भी थोड़ी देर के लिए जाकर वहाँ की खुशियों को बढ़ा देता है और वैसे ही चला जाता है जैसे कि भगवान भक्त को दर्शन देकर चले जाते हैं दोनों में दूरी के कारण की दोंनों में प्रेम भाव बना हुआ है साथ रहने से दोनों के बीच मन–मुटाव बढ़ सकता है ।

खंड – ख

प्रश्न 1:

कौन सा आघात अप्रत्याशित था और उसका लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर 1:

लेखक अतिथि से ऊब चुका था वह यह चाहता था कि किसी तरह सम्मान के साथ वह विदा हो जाए , मगर जब अतिथि ने कहा कि वह धोबी से अपने कपड़े धुलवाना चाहता है । यह आघात लेखक के लिए अप्रत्याशित था और ऐसी पीड़ा देने वाला था जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी । लेखक चाहता था कि अतिथि जल्दी से जल्दी चला जाए मगर कपड़े धुलवाने का मतलब अतिथि अभी और रुकना चाहता था जो कि लेखक के लिए असहनशील होता जा रहा था ।

प्रश्न 2:

'सम्बन्धों का संक्रमण के दौर से गुजरना '– इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर 2:

' सम्बन्धों का संक्रमण के दौर से गुजरना ' का आशय है कि संबन्धों में दूरी , मन–मुटाव या खटास आ जाना लेखक के घर जब अतिथि आया था तब लेखक ने उसका खूब आदर सत्कार किया हँसी ठहाके गूँजने लगे घर में चारों तरफ खुशी का माहौल सा छा गया , लेकिन जब अतिथि ज्यादा देर रुककर बोझ बनने लगा तो घर के लोग उससे कटे कटे से रहने लगे और यही मनाने लगे कि अतिथि कब यहाँ से जाएगा यही संक्रमण का दौर था ।

प्रश्न 3:

जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के व्यवहार में क्या–क्या परिवर्तन आये ?

उत्तर 3:

अतिथि के चार दिनों तक भी न जाने से लेखक के व्यवहार बहुत बड़ा अंतर आ गया हँसी मजाक से शुरू हुई बातचीत धीरे–धीरे दूरी ओर खमोशी में बदलने लगी अच्छे भोजन से खिचड़ी पर आ गए । लेखक मन नही मन अतिथि को कोसने लगा , मन में जो प्रेम के भाव थे उन्होंने अब गालियों का रूप ले लिया था और लेखक अतिथि को गेट आउट तक कहने को तैयार हो गया ।